

बढ़ते कदम

UPS ACS

UTTAR PRADESH STATE AIDS CONTROL SOCIETY

अंक-1, अप्रैल-जून, 2014



पन्नों में

- स्मार्ट फोन से एचआईवी/एड्स जागरूकता
- स्ट्रॉंग मैन ऑफ उत्तर प्रदेश केस स्टडी
- अखबार की सुर्खियों से
- पार्टनर्स कॉलम
- प्रचार-प्रसार



उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी

एक बज़र

1. परियोजना निदेशक की कलम से
2. स्मार्ट फोन से एचआईवी / एड्स जागरूकता- अपर परियोजना निदेशक
3. स्ट्रॉंग मैन ऑफ उत्तर प्रदेश-केस स्टडी
4. प्रथम त्रैमास की गतिविधियाँ
5. अखबार की सुर्खियों से
6. प्रचार-प्रसार
7. प्रशिक्षण व उन्मुखीकरण कार्यक्रम
8. एनआइबीबीएस
9. पार्टनर्स कॉलम
10. सम्पादकीय
11. अगले त्रैमास की गतिविधियाँ

परियोजना निदेशक की कलम से

उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी के पन्द्रह सालों के सफर में हम पहली बार इस न्यूज़लेटर के जरिये अपने साथियों और सहयोगियों से रुबरू हो रहे हैं। इस न्यूज़लेटर का उद्देश्य है आपसी संवाद की एक पहल। इस संवाद को शुरू करने का एक पहलू ये भी है कि एचआईवी/एड्स की रोकथाम चिकित्सा और स्वास्थ्य विभाग के अकेले प्रयासों से संभव नहीं है।



एचआईवी/एड्स संक्रमण के कई सामाजिक व आर्थिक आयाम हैं और इन सभी को ध्यान में रखते हुए यह जरूरी है कि विभिन्न विभाग, संस्थाएं और संगठन एक साथ एक मंच पर आएं और मिल कर काम करें। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि सिर्फ जागरूकता के द्वारा ही हम समाज में एचआईवी/एड्स के साथ रह रहे लोगों को एक सम्मानित जीवन जीने का हक दिला सकते हैं।

हमारी कोशिश रहेगी कि इस न्यूज़लेटर के जरिये हम अपने कार्यक्रमों, नीतियों, योजनाओं और बेस्ट प्रैक्टिसेस को एक दूसरे के साथ बांटे। इससे जहां हम अपने क्रिया कलापों को दूसरों के सामने रख सकेंगे वहीं हमें दूसरों द्वारा किये जो रहे सराहनीय कार्यों से सीखने का मौका भी मिलेगा। इसके अलावा हम आने वाले समय में साथ मिल कर काम करने की योजनाएं भी बना सकते हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी के त्रैमासिक न्यूज़लेटर का यह पहला संस्करण है। इसमें उन सभी कार्यक्रम और गतिविधियों को शामिल किया गया है जो अप्रैल से जून 2014 के बीच पूरी की गई। इसी के साथ इस न्यूज़लेटर में आने वाले त्रैमास की गतिविधियों के बारे में जानकारी भी दी गई है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं और सुझावों से हम इसे और भी अर्थपूर्ण बना सकते हैं। इन्हीं प्रतिक्रियाओं और सुझावों को जानने के लिए हम अगले त्रैमासिक से 'संपादक के नाम चिट्ठी' कॉलम की शुरुआत कर रहे हैं, जिसके लिए आप सभी के पत्रों का हमें बेसब्री से इंतजार रहेगा।

शुभकामनाओं सहित.....

आलोक कुमार
परियोजना निदेशक

उ.प्र.रा. एड्स नियंत्रण सोसायटी

स्मार्ट फोन से एचआईवी/एड्स जागरूकता



स्मार्ट फोन के बढ़ते प्रयोग को देखते हुए, उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी ने भी फोन के माध्यम से लोगों को एचआईवी/एड्स के बारे में जागरूक करने की एक बेहतर शुरुआत की है।

आईफोन और एंड्राइड एप्लीकेशन बेस्ड फोन का इस्तेमाल करने वाले अब अपने फोन पर ही एचआईवी/एड्स सम्बंधित पूरी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। एचआईवी/एड्स से सम्बंधित जानकारी देने का इस तरह का अपना एक अनोखा प्रयास है।

आज के दौर में हर दूसरा व्यक्ति मोबाइल फोन का इस्तेमाल कर रहा है, खासतौर से युवा वर्ग। अकेले उत्तर प्रदेश में करोड़ों लोग स्मार्ट फोन का इस्तेमाल कर रहे हैं। हमारी कोशिश है कि तकनीक प्रेमी वर्ग और उच्च व मध्यम वर्ग के लोगों को जागरूकता अभियान से जोड़ा जाए।

ऐसे में स्मार्ट फोन एप्लीकेशन के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा लोगों तक एचआईवी/एड्स से सम्बंधित जानकारी और सूचनाएं उपलब्ध कराई जा सकेंगी। इसी को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी द्वारा 'एड्स अवेयरनेस मोबाइल एप्लीकेशन' को तैयार किया गया है।

यह मोबाइल एप्लीकेशन (एप) दो आपरेटिंग सिस्टम्स, आईफोन और एंड्राइड प्लेटफार्म के स्मार्ट फोन पर काम करता है। इसे गूगल प्ले स्टोर या आईफोन एप स्टोर से आसानी से डाउनलोड किया जा सकेगा। एप का लिंक उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी की नयी वेबसाइट upsacs.nic.in पर भी मौजूद है और इसे सीधे अपने मोबाइल पर लिंक किया जा सकेगा।

स्मार्ट फोन यूज़र्स एचआईवी/एड्स से जुड़ी भ्रांतियां, इसके फैलने के मुख्य कारण, बचाव के उपायों के साथ-साथ उत्तर प्रदेश

राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी द्वारा दी जा रही सुविधाएं जैसे एचआईवी/एड्स की जांच के लिए नजदीकी आईसीटीसी सेंटर, ब्लड बैंक, एआरटी केन्द्र की जानकारी भी इस एप के माध्यम से प्राप्त कर सकेंगे।

इस एप का सबसे महत्वपूर्ण आयाम यह है कि इसमें ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम की सहायता से किसी भी केन्द्र की समुचित जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अब कोई भी व्यक्ति अपनी गोपनीयता को बरकरार रखते हुए एचआईवी/एड्स के बारे में सही जानकारी ले सकता है।



नरेन्द्र कुमार

अपर परियोजना निदेशक
उ.प्र.रा. एड्स नियंत्रण सोसायटी

स्ट्रॉंग मैन ऑफ उत्तर प्रदेश-केस स्टडी

मेरा नाम दिनेश कुमार यादव है और मैं गजपफरपुर गांव का रहने वाला हूँ, जो उत्तर प्रदेश राज्य के जौनपुर जिले में है। मैं बचपन से ही अपने माँ बाप का एक दुबला पतला और कमजोर बच्चा था। स्कूल में खेलने और दौड़ने भागने के बजाए मेरा समय बिस्तर पर लेटे हुए किसी बीमारी से जूझते हुए बीतता था।

मेरी माँ भी मेरी ही तरह दुबली पतली और कमजोर सी दिखती थी - हर वक्त तरह-तरह की दवाएं खाती रहती थी जिनसे उसे कभी कोई फायदा होता नहीं दिखा। दिन-ब-दिन उसकी हालत और बिगड़ती रही और अंत में उसे मुंबई के एक अस्पताल को रेफर किया गया। मेरे पिता कभी भी हार न मानने वालों में से है। उन्होंने माँ और मेरे इलाज के लिए अपनी जमीन का एक टुकड़ा बेच दिया और हमें लेकर मुंबई चले गये।

लगभग एक सप्ताह इलाज करवाने के बाद हम वापस घर आये। माँ की और मेरी तबियत में काफी सुधार हुआ। मुझे पहली बार ठीक से भूख लगनी शुरू हुई और शरीर में कुछ ताकत सी महसूस हुई। मैंने दोबारा से स्कूल जाना शुरू किया और पढ़ाई में धीरे-धीरे बेहतर होने लगा।

लगभग एक साल के अंदर हम दोनों पूरी तरह से ठीक हो गए लेकिन दवाओं का सिलसिला जारी रहा। मैं माँ से इसका कारण पूछता था पर मुझे कभी कोई जवाब नहीं मिला। 2006 में, जब मैं काफी बड़ा और समझदार हो गया था, एक दिन मेरे पिता हम दोनों से बोले, “अब तुम दोनों को दवा लेने मुंबई नहीं जाना पड़ेगा, बल्कि यहीं वाराणसी में मिल जाया करेगी”।

जब दवाओं के लिए वाराणसी में हमने पंजीकरण कराया, उस वक्त आईसीटीसी केन्द्र के सलाहकार ने मुझे मेरे एचआईवी पॉजिटिव स्टेटस के बारे में बताया। उस वख्त तक मुझे एचआईवी के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी हो गयी थी पर मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि एक दिन मैं खुद इस संक्रमण का शिकार हो जाऊंगा। मैंने घर आकर माँ से इस बात को साझा किया, हम दोनों खूब रोए। फिर मेरी माँ ने मुझे समझाया, “बेटा, ये हमारा भाग्य है और हमें इसके साथ रहना है। तुम मेरे बहादुर बच्चे हो और मुझे यकीन है कि तुम जिंदगी से कभी हार नहीं मानोगे”।

उस दिन मैं रात भर सो नहीं सका, माँ के शब्द मेरे कानों में गूंजते रहे। दूसरा दिन मेरे लिए एक नयी सुबह ले कर आया। मेरी माँ के शब्द मुझे अब भी सुनाई पड़ रहे थे और प्रेरित कर रहे थे। मैंने उसी समय ये फैसला लिया कि मुझे अपनी माँ को सही साबित करने के लिए कुछ करना है। मैंने जिम ज्वाइन किया और अपनी बॉडी पर वर्क करना शुरू कर दिया। दो साल के अंदर ही मुझे ‘स्ट्रॉंग मैन ऑफ जौनपुर’ के खिताब से सम्मानित किया गया। यह सम्मान बॉडी बिल्डिंग के लिए दिया जाता है। इसके छः महीने बाद मैंने पूर्वांचल बॉडी बिल्डिंग चैम्पियनशिप जीती।

यह पल मेरे जीवन के सबसे अनमोल पल थे क्योंकि मैं अपनी माँ के शब्दों को सच कर सका और उनके इस दुनिया से जाने से पहले उन्हें दिखा सका कि मैं सचमुच उनका बहादुर बच्चा हूँ।



प्रथम त्रैमास की गतिविधियाँ



विश्व रक्तदाता दिवस -14 जून 2014

पिछले कई वर्षों कि तरह इस वर्ष भी प्रदेश में विश्व रक्तदाता दिवस 14 जून को उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी द्वारा जोर शोर से मनाया गया। यह दिन प्रसिद्ध वैज्ञानिक कार्ल लैंडस्टीनर (1867-1943) की स्मृति में मनाया जाता है, जिन्होंने ब्लड ग्रुप ए, बी और ओ की खोज की थी।



इस वर्ष, विश्व रक्तदाता दिवस का विषय था 'जननी सुरक्षा हेतु सुरक्षित रक्त'। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है नियमित रूप से रक्तदान करने वालों के प्रति आभार प्रकट करना, जिनके रक्तदान करने से सैकड़ों लोगों की जान बचाने में मदद होती है। साथ ही साथ इस अवसर पर कोशिश की जाती है कि नए लोगों को स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रेरित किया जा सके।



14 जून 2014 को उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी द्वारा अपनी सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर पूरे प्रदेश में लगभग 700 स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया, जिनमें 3000 यूनिट से अधिक रक्त का संग्रह हुआ।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी ने राज्य स्तर पर नियमित रूप से रक्तदान करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को सम्मानित किया। सोसायटी के रक्त सुरक्षा अनुभाग के संयुक्त निदेशक डा. अशोक शुक्ला और उनके सहयोगियों को स्वैच्छिक रक्तदान को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया।



इस अवसर पर प्रमुख सचिव चिकित्सा, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण श्री अरविन्द कुमार ने रक्तदाताओं को सोशल मीडिया से जुड़ने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि स्वैच्छिक रक्तदाताओं को सोशल मीडिया साइट्स जैसे फेसबुक, ट्विटर या लिंकडइन जैसे प्लेटफॉर्म पर अपना ग्रुप बनाना चाहिए जिससे आकस्मिक परिस्थितियों में रक्त की आवश्यकता पड़ने पर उन्हें संपर्क किया जा सके। इस तरह के समूहों को अस्पतालों से जोड़ने का प्रयास भी किया जाना चाहिए।



कुछ नियमित रक्तदाताओं के सन्देश :

वी. के. सिंह (अस्सी से अधिक बार रक्त दान कर चुके हैं)

मैं एक अस्पताल में काम करता हूँ और इस बात का गवाह हूँ कि कैसे रिश्तेदार अपनी जान छुड़ा कर भागते हैं जब उन्हें पता चलता है कि उनके मरीज को रक्त की जरूरत है। इस तरह की परिस्थितियों ने मुझे रक्तदान के लिए प्रेरित किया।

1976 में मेरा एक एक्सीडेंट वाराणसी में हुआ और खून की कमी के कारण मेरी जान बचने का कोई संयोग नहीं था। मैंने अपने भगवान से एक अनुबंध किया - तुम मेरी जान बचा लो और मैं बादा करता हूँ कि मैं कभी भी किसी को खून की कमी से मरने नहीं दूंगा। और उस दिन से मैं रक्तदान के कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर भाग लेता हूँ और अब तक 125 से ज्यादा स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों का आयोजन करवा चुका हूँ।

पी. एम. श्रीवास्तव

संगीता रानी (सत्रह बार रक्त दान किया)

मैं अपनी शादी की वर्षगांठ और अपने जन्म दिन को हमेशा रक्तदान कर मनाती हूँ।

संत निरंकारी संध

नालियों

मैं खून बहाने से अच्छा है कि वो किसी इंसान कि नसों में दौड़े। चाहे शहर हो गांव - जहाँ भी कहीं खून की जरूरत होगी, मैं और मेरे साथी रक्तदान के लिए हमेशा आगे आयेँगे। हमारे संध के रक्तदाता हर जगह मौजूद हैं।

हमारे

कार्यकर्ता हर गांव में मौजूद हैं और समाज कार्य में लगे हुए हैं। रक्तदान के लिए उन्हें कही भी व कभी भी संपर्क किया जा सकता है।

तेहरु युवा केंद्र

मैंने 39

अजय सक्सेना

बार रक्तदान किया है और हर बार ये महसूस किया है कि रक्तदान किसी भी बड़े से बड़े तीर्थ पर जाने से कहीं बड़ा पुण्य का काम है।



श्री अहमद हसन
मा. मंत्री चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, उत्तर प्रदेश



श्री अखिलेश यादव
मा. मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

विश्व रक्तदाता दिवस 14 जून, 2014

विशेष स्वैच्छिक रक्तदान माह (14 जून से 13 जुलाई, 2014) में निकटतम रक्तकोष या रक्तदान शिविर में जाकर रक्तदान करें।

जननी रक्षा हेतु

सुरक्षित रक्त



श्री शंकर लाल माई
मा. राज्यमंत्री, चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, उत्तर प्रदेश



श्री नितिन अग्रवाल
मा. राज्यमंत्री, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, उत्तर प्रदेश

18 वर्ष से 65 वर्ष की आयु का स्वस्थ व्यक्ति लाइसेंस शुदा रक्तकोष में अथवा रक्तदान शिविर में तीन माह के अन्तराल पर रक्तदान कर सकता है।

संदेश

हर वर्ष का विषय है कि उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियन्त्रण सोसाइटी द्वारा इस वर्ष 'विश्व रक्तदाता दिवस' 14 जून 2014 के अवसर पर पूरे प्रदेश में नियमित रूप से स्वैच्छिक रक्तदान करने वाले रक्तदाताओं का सम्मान किया जा रहा है। प्रत्येक रक्तदान जीवन का उपहार है। रक्तदान कर किसी व्यक्ति को जीवन का उपहार दिया जा सकता है।

स्वैच्छिक रक्तदान से प्राप्ता रक्त ही सबसे सुरक्षित होता है। गर्भवती माताओं एवं अन्य गम्भीर रूप से बीमार व्यक्तियों हीमोफीलिया / थैलीसीमिया जैसे रोग से ग्रसित बच्चों को रक्तदान के माध्यम से नवजीवन दिया जा सकता है। जग-मानस में अभी भी रक्तदान को लेकर कई धारियाँ व्याप्त हैं जबकि 18 वर्ष से 65 वर्ष तक का कोई भी स्वस्थ व्यक्ति, जिसका वजन 45 कि.ग्रा. से अधिक हो, तीन माह के अन्तराल पर रक्तदान कर सकता है।

प्रदेश सरकार सभी को सुरक्षित रक्त एवं रक्त उत्पाद उपलब्ध कराने हेतु प्रयत्नशील है। परन्तु यह कार्य आपकी सहयोग एवं योगदान के बिना सम्भव नहीं है। स्वैच्छिक रक्तदान के प्रति जागरूकता पैदा करने में राजकीय एवं स्वैच्छिक संघर्ष अहम भूमिका निभा सकते हैं।

आपसे अपील है कि विश्व रक्तदाता दिवस के उपलक्ष्य में भाग्य जा रहे विशेष स्वैच्छिक रक्तदान माह (14 जून से 13 जुलाई, 2014) में अपने निकटतम रक्तकोष में रक्तदान कर इस पुनीत कार्य में अपना योगदान दें व किसी जरूरतमन्द को जीवन का उपहार दें।

विश्व रक्तदाता दिवस के सफल आयोजन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अखिलेश यादव)

प्रचार-प्रसार

प्रचार-प्रसार एचआईवी/एड्स की रोकथाम के लिए की जा रही गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। लोगों में एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों में तरह-तरह के अभिनव प्रयोग किये जाते रहे हैं। इस वर्ष के प्रारम्भ के साथ ही आउट डोर मीडिया जैसे-होडिंग, बैनर और ट्रांजिट मीडिया जैसे-बस व ऑटो के द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया।



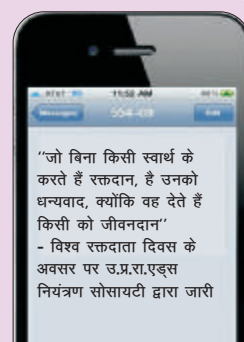
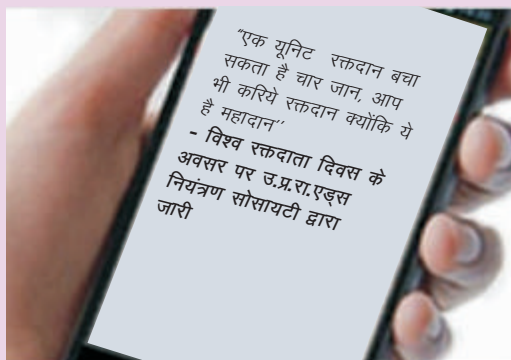
बसों व ऑटो रिक्शा पर एचआईवी/एड्स सम्बन्धित सन्देश

उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी द्वारा ग्रामीण इलाकों (जहाँ से लोगों का पलायन होता रहता है) में चलने वाली लंबी दूरी की बसों तथा शहर में चलने वाली सिटी बस व ऑटो रिक्शा पर प्रेरक संदेशों के द्वारा एचआईवी/एड्स के प्रति जानकारी दी जाती है। अब तक कुल 700 बसों और 1400 ऑटो रिक्शा पर लगे प्रेरक संदेशों के द्वारा लोगों में जागरूकता बढ़ाने का काम हो रहा है।



सोशल मीडिया

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल फोन के बढ़ते हुए उपयोग को ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी अब वेबसाइट व मोबाइल एसएमएस के माध्यम से भी जागरूकता फैलाने का काम कर रही है। इस वर्ष विश्व रक्तदाता दिवस पर सोसायटी के डेटाबेस से 70 लाख लोगों को एसएमएस के माध्यम से रक्तदान करने वालों को प्रोत्साहन और युवाओं को रक्तदान करने के लिए प्रेरणादायक सन्देश दिये गए।



प्रशिक्षण व उन्मुखीकरण कार्यक्रम

प्रशिक्षण और उन्मुखीकरण एक सतत प्रक्रिया है जो किसी भी कार्यक्रम के उच्चीकरण के लिए आवश्यक है। उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी द्वारा एचआईवी/एड्स की रोकथाम में तत्पर सहयोगियों, सहकर्मियों और स्टेकहोल्डरों की क्षमता बढ़ाने के लिए समय-समय पर उन्मुखीकरण तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

इस तरह के कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य होता है लोगों की जानकारीयों और क्षमताओं को बढ़ाना। साथ ही साथ कोशिश रहती है कि सभी विभाग, संस्थाएँ व संगठन एचआईवी/एड्स व उससे जुड़े मुद्दों को अपने कार्यक्रमों में सम्मिलित करें और अपनी कार्य प्रणाली का हिस्सा बनाये, जिससे एचआईवी/एड्स के साथ जी रहे लोगों को लांछन या भेदभाव का सामना न करना पड़े।

रक्त सुरक्षा

प्रदेश में सुरक्षित रक्त की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी द्वारा समय-समय पर ब्लड बैंक में कार्यरत स्टाफ के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसी क्रम में 30 मई 2014 को होटल बैबियन में प्रदेश के 38 जनपदों के ब्लड बैंक में कार्यरत परामर्शदाताओं को स्वैच्छिक रक्तदान के लिए प्रशिक्षण के माध्यम से प्रेरित किया गया।



मेनस्ट्रीमिंग प्रशिक्षण

एचआईवी/एड्स विषय को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए मेनस्ट्रीमिंग कार्यक्रम के अन्तर्गत 32 जनपदों में विभिन्न विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण व उन्मुखीकरण कार्यशालायें जनपद, ब्लॉक व स्थानीय स्तर पर आयोजित की जाती रही है। माह जून, 2014 में जनपद लखनऊ में एएनएम और आशा वर्कर्स के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन चिनहट ब्लॉक में किया गया। इसके अतिरिक्त, औद्योगिक श्रमिकों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत 16 से 20 जून तक 5 कार्यशालायें आयोजित की गयी। दोनों कार्यशालाओं में क्रमशः 60 व 169 प्रतिभागियों को एचआईवी/एड्स विषय पर संवेदित किया गया।



NIBBS-नेशनल इण्टीग्रेटिव बायोलोजिकल एण्ड बिहेवियरल सर्विलेन्स

राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तर पर एचआईवी दर का पता सेन्टिनल सर्विलेन्स से लगाया जाता है। पूर्व में एचआईवी सेन्टिनल सर्विलेन्स के दौरान केवल गर्भवती माताओं तथा उच्च जोखिम समूह जैसे Commercial Sex Workers (CSW), Men having Sex with Men (MSM), Injecting Drug Users (IDUs) का नमूना लेकर प्रदेश में एचआईवी प्रीविलेन्स की दर का आंकलन किया जाता था। विश्व में पहली बार नेशनल इण्टीग्रेटिव बायोलोजिकल एण्ड बिहेवियरल सर्विलेन्स (NIBBS) सभी राज्यों में कराया जा रहा है। इसके अन्तर्गत गर्भवती माताओं तथा उच्च जोखिम समूहों के साथ-साथ नव विवाहित महिलाओं और प्रवासियों को भी सम्मिलित किया गया है।

NIBBS से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर एचआईवी संक्रमण की दर को रोकने सम्बन्धित नीतिनिर्धारण करने में मदद मिलती है। उत्तर प्रदेश में NIBBS हेतु 25 जनपदों में 17 डोमेन चयनित किये गये हैं। NIBBS के लिए उच्च जोखिम समूह का सैम्पल साइज 400 तथा प्रवासियों एवं नव विवाहित महिलाओं (CMW) का सैम्पल साइज 1200 लिया गया है।

NIBBS कार्यक्रम द्वारा आच्छादित जनपद

कानपुर नगर झांसी ज्योतिबाफुलेनगर गोरखपुर लखनऊ	एटा गाजियाबाद इलाहाबाद जालौन बरेली	कन्नौज गौतमबुद्ध नगर बहराइच बस्ती जौनपुर	आजमगढ़ मऊ वाराणसी हमीरपुर बिजनौर	महोबा शाहजहाँपुर अलीगढ़ आगरा देवरिया
---	--	--	--	--

UPSACS begins IBBS among high-risk groups

PIONEER NEWS SERVICE ■ UTTARANCHAL

The Uttar Pradesh State AIDS Control Society (UPSACS) has begun the Integrated Behavioural Survey (IBBS) among the high-risk groups in AIZS in the state for the first time. State Epidemiologist, Prasad Pathak, while talking to The Pioneer on Monday said that this Integrated Behavioural Survey would be carried out in the hot spots of high-risk groups with the consent of the individual and through community participation.

She said that such an integrated survey would help in the policy formulations at the Central Government level later in an attempt to control AIDS. Pathak informed those present that an extensive workshop was carried out to train 200 people from a private company who would carry out the surveillance under the monitoring of UPSACS. The IBBS is being carried out across the country at the same time. In the state it has kicked off in nine districts out of 17 under the domain of UPSACS.

The UPSACS members were also trained for this project at the Institute selected by the Department of AIDS Control which was AIMS, Delhi. The survey will be carried out through a Computer-Assisted Personal Interview through the consent of the person concerned. She said that a State Integrated Behavioural Survey Unit has been formed for the implementation of the survey.

Explaining the concept, Pathak said that till now the HIV Sentinel Surveillance which was being carried out in the country to study the HIV prevalence was not using the behavioural approach. "The HIV Sentinel Surveillance was being carried out through sample collection from pregnant women at the AIZS, Nalanda Clinics which was an indicator of the HIV prevalence in the general population and through the STI (Sexually Transmitted Infections) clinics which gave the HIV prevalence in the high-risk groups. However, we had no behavioural survey and it was carried out as a separate survey from the biological ones. This was an attempt to get an integrated survey wherein we know what the behaviour is in the high-risk groups which can be targeted in a similar manner," said Pathak.

Elaborating it further, she said, "This will help in many ways. Suppose we find out that the HIV prevalence was related to the condom use in the high-risk group the policy formulators will formulate policies in the same manner and suppose we find out that the migrant behaviour was causing this problem we will target the risk group concerned to control AIDS. We will also know whether the high-risk group was going for multiple partners or single partners," she said.

The State Epidemiologist said that those who would be carrying out the survey would visit the hot spots of the high-risk groups. "Under this State Integrated Behavioural Survey Unit has been formed. At the district level the Community Advisory Board has been formed. The district administration will be informed and through parties NGOs the surveillance will be carried out in a closed-door manner after taking the consent of the individual. The high-risk groups on whom the visit will be carried out will be the female sex workers, males having sex with males, intravenous drug users, train porters and the currently married females at the source point of migration," she said.

The State Epidemiologist said that the UPSACS would monitor the surveillance which would be carried out by a private company which had been selected through the process of tendering by the Department of AIDS Control. She said that a completely ethical approach would be used. "The persons who give their consent for the survey will be given a code number which will be used in the online survey. The blood samples that will be collected will be dried ones," she added.

Meanwhile the UPSACS is also working out the modalities of providing free transport passes for travelling on buses in the HIV patients registered with the ART centres. An official from the UPSACS said that they were in the process of working out the modalities with the UPSRTC (Uttar Pradesh State Road Transport Corporation). "There are over 75,769 HIV patients who are registered with the ART centres and visit them regularly and 32,772 who visit them every month. These patients will benefit from the provision of these passes and will get free visits to the ART centre. We are taking time to work out the modalities because a scarcity of the patients has to be maintained," he said.

NIBBS में उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी की भूमिका

NIBBS के दौरान अनुश्रवण एवं सकारात्मक सहयोग का कार्य नाको द्वारा चयनित एजेन्सी Neilson, जो एक फील्ड रिसर्च एजेन्सी है, के माध्यम से कराया जा रहा है। मौजूदा समय में उत्तर प्रदेश में कोर हाई रिस्क ग्रुप का सैम्पलिंग फ्रेम डेवेलपमेंट पूरा किया जा चुका है। जहाँ हाई रिस्क ग्रुप की संख्या रिसर्च एजेन्सी द्वारा निश्चित सैम्पल साइज से कम पाई गई है उन डोमेन्स का दोबारा भ्रमण किया जाना है।

नव विवाहित महिलाओं और प्रवासी वर्गीकरण का सैम्पल फ्रेम डेवेलपमेंट चल रहा है - बहराइच, बस्ती और जौनपुर जिलों में नव विवाहित महिलाओं का और गौतमबुद्ध नगर में पुरुष प्रवासियों का। इस सर्वे में सोसायटी द्वारा 'एसएफडी' और 'मेन सर्वे' के लिए 'कापी' (कम्प्यूटर एसिस्टेड पर्सनल इंटरव्यूवर) का इस्तेमाल किया जा रहा है।

पार्टनर्स कॉलम

विहान - स्टेट ओवरसाईट कमेटी मीटिंग

प्रदेश में विहान कार्यक्रम एचआईवी/एड्स संक्रमित व्यक्तियों की जीवन शैली को सुदृढ़ करने और उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने के उद्देश्य से संचालित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम इंडिया एचआईवी/एड्स एलाइन्स द्वारा वित्त पोषित है और उत्तर प्रदेश में यूपीएनपी प्लस द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है। विहान कार्यक्रम के अन्तर्गत 15 केयर सपोर्ट सेन्टर क्रमशः आगरा, अलीगढ़, इलाहाबाद, आजमगढ़, देवरिया, गाजीपुर, गोरखपुर, जौनपुर, कानपुर, कुशीनगर, लखनऊ, मेरठ, प्रतापगढ़, सिद्धार्थनगर और वाराणसी जनपदों में क्रियाशील है।

30 जून 2014 को विहान कार्यक्रम में गठित स्टेट ओवरसाईट कमेटी की चतुर्थ बैठक सोसायटी के अपर परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में सोसायटी के सभागार कक्ष में आयोजित की गई। इस बैठक में अपर परियोजना निदेशक ने एचआईवी/एड्स के साथ जी रहे लोगों को आम आदमी बीमा योजना, लोहिया आवास योजना, समाजवादी पेंशन योजना से जोड़ने एवं गरीबी रेखा से नीचे रह रहे लोगों को प्राथमिकता दिये जाने पर जोर दिया।

सम्पादकीय

डॉ. संगीता पाण्डेय

संयुक्त निदेशक (आईईसी)

उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी

एचआईवी/एड्स की रोकथाम प्रगतिशील देशों के सामने एक चुनौती है क्योंकि इस संक्रमण का शिकार अधिकतर युवा आयु के लोग होते हैं और जिसका सीधा असर देश की उत्पादकता पर पड़ता है। अभी तक इस संक्रमण का कोई निदान नहीं है। एचआईवी/एड्स के विषय में कहा जा सकता है कि इसकी जानकारी ही इससे बचाव का उपाय है।

इसके लिए विभिन्न विभागों और एजेंसियों को साथ मिल कर काम करने की आवश्यकता है। सूचना, शिक्षा और संवाद (आईईसी) पहली सीढ़ी है जिसके द्वारा सभी हिस्सेदारों के बीच तालमेल बिठा कर जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। एचआईवी/एड्स की जानकारी सिर्फ संक्रमण से बचाव के लिए ही जरूरी नहीं है बल्कि जागरूकता से लोगों की संवेदनशीलता को भी बढ़ाया जा सकता है और समाज में फैली भ्रांतियों और मिथ्या धारणाओं को दूर किया जा सकता है।

उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी ने पहली बार इस न्यूज़लेटर के द्वारा अपने सभी स्टेकहोल्डर्स के साथ सूचना और संवाद स्थापित करने का प्रयास किया है। न्यूज़लेटर किसी भी कार्यक्रम से जुड़ी आईईसी गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हमारी कोशिश रहेगी कि इसकी मदद से हम अपने सभी साथियों को सोसायटी द्वारा किये जाने वाले कार्यक्रमों, गतिविधियों और नीतियों के बारे में अवगत करा सकें। साथ ही साथ आपके सुझाव और समस्याएं भी हम तक पहुँच सकें।

इस त्रैमासिक न्यूज़लेटर का एक और विशेष पहलू है विचारों का आदान-प्रदान। इसीलिए हमने इसे एकल सवांद न रख कर इसमें द्विपक्षीय संवाद की सम्भावना रखी है। संपादक के नाम पत्र लिख कर आप अपनी बात हम तक पहुंचा सकते हैं और अपने कार्यक्रमों और गतिविधियों को सबके साथ बाँट सकते हैं। हमें उम्मीद है कि इस न्यूज़लेटर के माध्यम से शुरू हुए संवाद से हमारे प्रयासों को बल मिलेगा और एचआईवी/एड्स के साथ रह रहे लोगों को अपना जीवन बिना किसी भेदभाव का सामना किए बराबरी की हिस्सेदारी के साथ सम्मानपूर्वक जीने का अवसर मिलेगा।



अगले त्रैमास की गतिविधियाँ

- 7 से 12 जुलाई : रिसोर्स पूल के लिए मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण
- 9 से 12 जुलाई : एचआईवी / एड्स की मेनस्ट्रीमिंग के लिए अलग-अलग उद्योगों का प्रशिक्षण
- 10 जुलाई : मुख्य सचिव द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसायटी की वेबसाइट और मोबाइल एप की विधिवत शुरुआत।
- 14 जुलाई : लोक कला दलों की समीक्षा बैठक, स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल डेवेलपमेंट, बक्शी का तालाब, लखनऊ में।
- 15 से 18 जुलाई : लोक कला दलों की प्रशिक्षण कार्यशाला, स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल डेवेलपमेंट, बक्शी का तालाब, लखनऊ में।
- 16 से 20 जुलाई : एचआईवी / एड्स की मेनस्ट्रीमिंग के लिए अलग-अलग उद्योगों का प्रशिक्षण
- 18 जुलाई : स्टेट टेक्निकल वर्किंग ग्रुप की बैठक पिकप भवन में।
- 18 जुलाई : टीबी-एचआईवी समन्वय से जुड़े मुद्दों पर आईसीटीसी स्टेट टेक्निकल ग्रुप की बैठक।
- 28 से 31 जुलाई : एचआईवी / एड्स से जुड़े मुद्दों पर आंगनवाडी और सुपरवाइजर्स का प्रशिक्षण
- 31 जुलाई व 1 अगस्त : एसटीआई के परामर्शदाताओं का प्रशिक्षण सभागार कक्ष, पिकप भवन लखनऊ में।
- 1 व 2 अगस्त : एचआईवी / एड्स से जुड़े मुद्दों पर आंगनवाडी और सुपरवाइजर्स का प्रशिक्षण।
- 5 से 22 अगस्त : आईसीटीसी सलाहकारों की अनुश्रवण बैठक, सोसायटी के सभागार कक्ष में।
- 5 व 6 अगस्त : डेटा मैनेजर और परामर्शदाताओं के मॉनिटरिंग व इवेलुएशन टूल की समीक्षा बैठक, होटल बैबियन इन, इंदिरा नगर, लखनऊ में।

follow us on



/upaidcontrol



/upsacs



/upsacs

EDITORIAL BOARD



Dr. Manu Bhatnagar
JD-CST



Dr. Ashok Shukla
JD-BS



Mr. Anurag Gupta
JD-Finance



Dr. Sangeeta Pandey
JD-IEC



Dr. Preety Pathak
Incharge ICTC



Ms. Priti Kumari
JD-TI

IEC TEAM



Dr. Sangeeta Pandey
JD-IEC



Ms. Parul
Youth Consultant



Mr. Nirmal Tiwari
GIPA Co-ordinator



Mr. Vivek Dwivedi
Software Engineer



Ms. Anita Rana
Divisional Assistant



Mrs. Rama Srivastava
Divisional Assistant



Mr. Amrendra Mishra
Computer Operator



UTTAR PRADESH STATE AIDS CONTROL SOCIETY

Fourth Floor, A-Block, Pickup Bhavan Vibhuti khand, Gomtinagar, Lucknow

Contact No - 0522 2720360, 2723947, Fax - 9522-2721135

Website - www.upsacs.nic.in